❍ 18 / 12 / 21 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∫∫ 1 ∫∫ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *अपनी बुधी बेहद में रखी ?*

➢➢ *धारणा की और करवाई ?*

➢➢ *तपस्या द्वारा अपने विकर्मों व तमोगुण के संस्कारों को भस्म किया ?*

➢➢ *बालक और मालिकपन का बैलेंस रखा ?*

————————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ आत्मिक प्यार से जितना एक दो के स्नेही सहयोगी बनते हो उतना ही माया के विघ्न हटाने में भी सहयोग मिलता है। *सहयोग देना अर्थात् सहयोग लेना। तो परिवार में आत्मिक स्नेह देना है और माया पर विजय पाने का सहयोग लेना है। यह लेन-देन का हिसाब है।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∫∫ 2 ∫∫ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

✪ *श्रेष्ठ स्वमान* ✪

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं महान भाग्यशाली आत्मा हूँ"*

〰✧ सभी अपने को महान भाग्यशाली समझते हो ना? देखो कितना बड़ा भाग्य है जो वरदान भूमि पर वरदानों से झोली भरने के लिए पहुँच गये हो। ऐसा भाग्य विश्व में कितनी आत्माओंका है। कोटों में कोई और कोई में कोई में भी कोई। *तो यह खुशी सदा रखो कि जो सुनते थे, वर्णन करते थे, कोटों में कोई, कोई में भी कोई आत्मा, वह हम ही है।* इतनी खुशी है?

〰✧ सदा इसी खुशी में नाचते रहो - वाह मेरा भाग्य। यही गीत गाते रहो और इसी गीत के साथ खुशी में नाचते रहो। यह गीत गाना तो आता है ना - *'वाह रे मेरा भाग्य' और वाह मेरा बाबा। वाह ड्रामा वाह, यह गीत गाते रहो।*

〰✧ बहुत लकी हो। बाप तो सदा हर बच्चे को लवली बच्चा ही कहते हैं। *तो लवली भी हो, लकीएस्ट भी हो। कभी अपने को साधारण नहीं समझना, बहुत श्रेष्ठ हो। भगवान आपका बन गया तो और क्या चाहिए।* जब बीज को अपना बना दिया तो वृक्ष तो आ ही गया ना। तो सदा इसी खुशी में रहो। आपकी खुशी को देख दूसरे भी खुशी में नाचते रहेंगे।

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ मनोरंजन के रूप से मनाना वह अलग चीज है। वह तो संगमयुग है मौजों का युग, इसलिए मनोरंजन की रीति से भी मनाते हो और मनाओ, खूब मनाओ। लेकिन *परमात्म रंग में रंग जाना अर्थात बाप समान बन जाना।*

〰✧ यह है रंग में रंग जाना। जैसे बाप अशरीरी है, अव्यक्त है वैसे अशरीरी-पन का अनुभव करना वा अव्यक्त फरिश्ते-पन का अनुभव करना - यह है रंग में रंग जाना। *कर्म करो लेकिन अव्यक्त फरिश्ता बन के काम करो।*

〰✧ *अशरीरी-पन की स्थिति का जब चाहो तब अनुभव करो।* ऐसे मन और बुद्धि आपके कन्ट्रोल में हो। ऑर्डर करो - अशरीरी बन जाओ। ऑर्डर किया और हुआ। फरिश्ते बन जाये।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *अभी तो चलते-फिरते ऐसे अनुभव होना चाहिए जैसे साकार को देखा- चलते-फिरते या तो फ़रिश्ते रूप का या भविष्य रूप का अनुभव होता था, तभी तो औरों को भी होता था।* मैं टीचर हूँ, मैं सेवाधारी हूँ- यह तो जैसा समय वैसा स्वरूप हो जाता है। *अब स्वयं को फ़रिश्ते रूप में अनुभव करो तो साक्षात्कार होगा। साक्षात्कार का रूप कौन-सा है? फ़रिश्ता रूप बनना, चलते-फिरते फ़रिश्ता स्वरूप। अगर साक्षात् फ़रिश्ते नहीं बनेंगे तो साक्षात्कार कैसे करा सकेंगे? तो अब विशेष पुरुषार्थ कौन-सा है? यही कि फ़रिश्ता इस साकार सृष्टि पर आया हूँ सेवा अर्थ।* फ़रिश्ते प्रकट होते हैं, फिर समा जाते हैं। फ़रिश्ते सदा इस साकारी सृष्टि पर ठहरते नहीं, कर्म किया और गायब। तो जब ऐसे फ़रिश्ते होंगे तो इस देह और देह के सम्बन्ध व पुरानी दुनिया में पाँव नहीं टिकेगा। *जब कहते हो कि हम बाप के स्नेही हैं तो बाप सूक्ष्मवतनवासी और आप सारा दिन स्थूलवनतवासी, तो स्नेही कैसे? तो सूक्ष्मवतनवासी फ़रिश्ते बनो।* सर्व आकर्षणों या लगावों के रिश्ते और रास्ते बन्द करो तो कहेंगे कि बाप-स्नेह हो। *यहाँ होते हुए भी जैसे कि नहीं है- यह है लास्ट स्टेज । विशेष सेवार्थ निमित्त हो, तो पुरुषार्थ में भी विशेष होना चाहिए। जब दूसरों को चलते-फिरते अनुभव होगा कि आप लोग फ़रिश्ते हैं, तो दूसरे भी प्रेरणा ले सकेंगे।* अगर साकार सृष्टि की स्मृति से परे हो जाओ तो जो छोटी-छोटी बातों में टाइम वेस्ट करते हो, वह नहीं होगा। तो अब हाई जम्प लगावो। *साकार सृष्टि से एकदम फ़रिश्तों की दुनिया में व फ़रिश्ता स्वरूप- इसको कहते हैं हाई जम्प। तो छोटी-छोटी बातें शोभेंगी नहीं।* तो यह बाप की विशेष सौगात है। सौगात लेना अर्थात् फ़रिश्ता स्वरूप बनना। तो बाप भी यह फ़रिश्ता स्वरूप का चित्र सौगात में देते हैं। इस सौगात से पुरानी बातें सब समाप्त हो जायेंगी। क्या और क्यों की रट नहीं लगानी है। *निर्णय शक्ति, परखने की शक्ति, परिवर्तन शक्ति- जब ये तीनों शक्तियाँ होंगी तो ही एक-दूसरे को खुशखबरी सुनायेंगे। अगर खुद में परिवर्तन नहीं तो दूसरों में भी परिवर्तन नहीं ला सकेंगे।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- पढाई पर पूरा-पूरा ध्यान देना"*

➳ _ ➳ *मैं ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण आत्मा मुरलीधर बाबा से सच्ची सच्ची गीता सुनने सेण्टर पहुँच जाती हूँ... प्यारे बाबा ऊँचे ते ऊँचे धाम से मुझ आत्मा को सत्य ज्ञान देकर दुखों से मुक्त करने इस धरा पर उतर आयें हैं...* असत्य की दुनिया से निकाल सत्य की दुनिया में ले जाने आयें हैं... मैं मगन अवस्था में बैठ प्यारे मुरलीधर बाबा की मुरली सुनती हूँ...

❉ *ज्ञान के सागर मेरे प्यारे बाबा ज्ञान की बरसात करते हुए कहते हैं:-* "मेरे मीठे फूल बच्चे... *सत्य ज्ञान के बिना सत्य पिता के बिना किस कदर दुखो की अंधी गलियो में भटक रहे थे... अब जो ईश्वर पिता ने अपनी पलको से चुनकर फूलो सा सजाया है...* ज्ञान रत्नों से मालदार बनाया है... उस मीठे भाग्य के नशे में झूम जाओ... और ब्राह्मण होने के मीठे भाग्य पर इठलाओ..."

➳ _ ➳ *मैं आत्मा आदि-मध्य-अंत के ज्ञान को पाकर त्रिकालदर्शी स्थिति का अनुभव करते हुए कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे प्यारे बाबा..*. मै आत्मा आपसे ज्ञान रत्नों की असीम दौलत पाकर... सारे सुखो को कदमो में बिखरा रही हूँ...* स्वयं से थी कभी अनजान जो आज त्रिकालदर्शी बन मुस्करा रही हूँ... ब्रह्मा वंशी बन विश्व धरा पर चहक रही हूँ..."

❇ *मीठे बाबा मुझे रचना रचता का ज्ञान देकर स्वदर्शन चक्रधारी बनाते हुए कहते हैं:-** "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... दुनिया जिसे पुकार रही... वह विश्व पिता अपने बच्चों को बैठ पढ़ा रहा... ज्ञान रत्नों से दामन सजा रहा... अपनी सारी जागीर सारे खजाने बच्चों पर दिल खोल लुटा रहा...* सारे राज बताकर सदा का समझदार बना रहा... इस खुबसूरत मीठे भाग्य के नशे में झूम झूम जाओ..."

➳ _ ➳ *बाबा के प्यार में सुख को पाते हुए सुख सागर में लहराते हुए मैं आत्मा कहती हूँ:-* "मेरे प्राणप्रिय बाबा... मै आत्मा अपने अनोखे अदभुत से भाग्य पर बलिहार हूँ... धरा की मिटटी से सने देह के रिश्तो से निकल... *सच्चे प्यार सच्चे धन को पा रही हूँ... यूँ भगवान की गोद में इठलाऊँगी... भला कब मैंने सोचा था... कितना मीठा सा मेरा भाग्य है..."*

❇ *मेरे बाबा ज्ञान रतन धन से सजाकर ज्ञान रत्नों की खान सौगात में देते हुए कहते हैं:-* "प्यारे सिकीलधे मीठे बच्चे... ईश्वर पिता से वर्से में जो ज्ञान धन पाकर मालामाल बने हो... उस दौलत को हर साँस संकल्प में गिनते ही रहो... *पूरे विश्व में आप चुने हुए भाग्यशाली ब्रह्मा वत्स हो... और ईश्वर पिता के हर जज्बात को जानने वाले उनके दिल पर राज करने वाले दिल पसन्द हो... इस नशे की खुमारी में खो जाओ..."*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा परमात्म प्यार की अधिकारी बन प्यारे बाबा के दिलतख़्त पर बैठ मुस्कुराते हुए कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे बाबा... *मै आत्मा आज आपके प्यार को पाकर कितनी धनवान् हो गयी हूँ... ज्ञान रत्नों की बेशुमार दौलत मेरे चँहु ओर बिखरी है...* और इस अखूट खजाने को पाकर ज्ञान परी बन चहक रही हूँ... मा त्रिकालदर्शी बन मुस्करा रही हूँ..."

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- हमको भगवान पढ़ाते हैं यह नशा रखना है*"

➳ _ ➳ स्वयं भगवान ऊंचे ते ऊंचे धाम से मुझे पढ़ाने आते हैं यह स्मृति एक रूहानी नशे से मुझ आत्मा को भरपूर कर देती है और *अपने परमशिक्षक से भविष्य 21 जन्मों के लिए श्रेष्ठ प्रालब्ध बनाने वाले अविनाशी ज्ञान रत्नो को धारण करने के लिए अपने गॉडली स्टूडेंट स्वरूप में स्थित होकर, उनकी याद में मैं तेज - तेज कदमो से चलते हुए पहुँच जाती हूँ अपने ईश्वरीय विश्वविद्यालय में और जा कर क्लास रूम में बैठ जाती हूँ*। मन ही मन अपने सर्वश्रेष्ठ भाग्य के बारे में मैं विचार करती हूँ कि कितनी पदमापदम सौभाग्यशाली हूँ मैं आत्मा जो स्वयं भगवान मुझे पढ़ाने के लिए अपने ऊंचे ते ऊंचे धाम को छोड़ मेरे पास आते हैं। अपने सर्वश्रेष्ठ भाग्य की स्मृति में खोई, अपने भाग्य का गुणगान करते - करते मैं महसूस करती हूँ जैसे मेरे परमशिक्षक शिव बाबा मेरे सामने आकर उपस्थित हो गए हैं।

➳ _ ➳ देख रही हूँ मैं अपने सामने संदली पर बैठे सम्पूर्ण अव्यक्त फ़रिश्ता स्वरूप में अपने प्यारे बापदादा को जो शिक्षक के रूप में मेरे सामने बैठे मुझे निहार रहें हैं। *अपने नयनो में असीम स्नेह को समाये अपनी मीठी दृष्टि से मुझे निहारते हुए बापदादा मन्द - मन्द मुस्करा रहें हैं। अपने परमशिक्षक के इस मनभावन, सुन्दर सलौने स्वरूप को अपनी आंखों में बसाकर मैं एकटक उन्हें निहारती जा रही हूँ*। बाबा की मीठी दृष्टि एक रूहानी नशे से मुझ आत्मा को भरपूर कर रही है। बापदादा के मुख कमल से निकल रहे एक - एक महावाक्य को चात्रिक बन मैं आत्मा सुन रही हूँ और अपनी बुद्धि में उसे धारण करती जा रही हूँ। *बाबा का एक - एक महावाक्य गहराई तक मेरे अंदर समाता जा रहा है। अपने शिव भोलानाथ की सच्ची पार्वती बन उनके मुख कमल से उच्चारित अमरकथा को मैं बड़े प्यार से और बड़े ध्यान से सुन रही हूँ*।

➳ _ ➳ अपनी बुद्धि रूपी झोली को अपने परमशिक्षक शिव बाबा के अविनाशी ज्ञान रत्नों से भरपूर करके, मन ही मन मैं स्वयं से प्रतिज्ञा करती हूँ कि हर रोज़ भगवान मुझे जो पढ़ाई पढ़ाने के लिए आते हैं उसे अच्छी रीति पढ़ कर. अपने जीवन मे धारण करके. भविष्य जन्म जन्मांतर के लिए अपनी श्रेष्ठ

प्रालब्ध बनाने का पुरुषार्थ मैं अवश्य करूँगी । *अपने आप से यह प्रतिज्ञा करके अपने प्यारे बापदादा की और मैं जैसे ही नजर घुमाती हूँ, मैं महसूस करती हूँ जैसे बाबा का वरदानी हाथ मेरे सिर के ऊपर है और बाबा के वरदानी हस्तों से शक्तियों की अनन्त धारायें निकल कर मेरे अंदर समाकर, मेरी हर प्रतिज्ञा को पूरा करने का बल मेरे अंदर भरती जा रही हैं*। रंग बिरंगी शक्तियों की सहस्त्रो किरणों की बरसात मेरे ऊपर हो रही है जो मुझे बहुत ही शक्तिशाली बना रही हैं। *शक्तियों की ये अनन्त किरणे मुझे शक्तिशाली बनाने के साथ - साथ डबल लाइट स्थिति में स्थित करती जा रही है*।

➳ _ ➳ स्थूल देह और सूक्ष्म देह इन दोनों के भान से मुक्त एक अति सुन्दर निराकारी स्थिति में मैं स्थित होकर अब अपने आपको देख रही हूँ एक अति सूक्ष्म बिंदु के रूप में जो एक प्रकाशपुंज के समान चमकता हुआ दिखाई दे रहा हैं। *कुछ क्षणों के लिए मैं अपने इस स्वरूप में खो जाती हूँ और अपने स्व स्वरूप में टिक कर, अपने अंदर समाये गुणों और शक्तियों के अनुभव का आनन्द लेने लगती हूँ*। यह आत्म स्मृति बहुत गहरी फीलिंग का मुझे अनुभव करवाकर तृप्त कर देती हैं। अपने इस निराकार स्वरूप में स्थित अब मैं देख रही हूँ अपने सामने अपने प्यारे शिव बाबा को भी उनके निराकार बिंदु स्वरूप में। *महाज्योति के रूप में अनन्त शक्तियों की किरणों को बिखेरते हुए मेरे प्यारे पिता मेरे सम्मुख है। उनकी किरणों रूपी बाहों में समाकर अब मैं आत्मा उनके साथ उनके वतन की ओर जा रही हूँ*।

➳ _ ➳ अपनी किरणों रूपी बाहों में मुझ बिंदु आत्मा को समाये मेरे मीठे बाबा अब मुझे साकारी दुनिया से निकाल, आकारी दुनिया को पार करके अपनी निराकारी दुनिया मे ले आये हैं। अपने इस मूलवतन घर में अब मैं ज्ञान सागर अपने प्यारे पिता के सामने बैठी हूँ। *उनसे आ रही सर्वशक्तियों की सतरंगी किरणे मुझ पर बरस रही हैं। ज्ञान सागर मेरे प्यारे पिता के ज्ञान की रिमझिम फुहारों का शीतल स्पर्श मेरी बुद्धि को स्वच्छ बना रहा है। ऐसा लग रहा है जैसे ज्ञान की शक्तिशाली किरणो के रूप में ज्ञान की बरसात मेरे ऊपर करके, बाबा मुझे समपूर्ण ज्ञानवान बना रहे हैं*। मास्टर नॉलेजफुल बन कर, ज्ञान की शक्ति से भरपूर होकर अब मैं वापिस साकारी दुनिया में लौट रही हूँ।

➳ _ ➳ अपने साकार तन में भृकुटि के अकालतख्त पर अब मैं फिर से विराजमान हूँ और अपने गॉडली स्टूडेंट स्वरुप को सदा स्मृति में रखते हुए अब मैं हर पल इस खुशी में रहती हूँ कि ऊंचे ते ऊंचे धाम से भगवान मुझे पढ़ाने आते हैं। *यह स्मृति मुझे अपने परमशिक्षक शिव पिता की शिक्षाओं को जीवन मे धारण करने का बल प्रदान करने के साथ - साथ मेरे पुरुषार्थी जीवन को भी उमंग उत्साह से सदा भरपूर रखती है*।

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं तपस्या द्वारा अपने विकर्मों वा तमोगुण के संस्कारों को भस्म करने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं तपस्वीमूर्त आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा बालक और मालिकपन का सदैव बैलेन्स रखती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा संस्कारों की टक्कर से सदा बच जाती हूँ ।*
✺ *मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ *अब बापदादा मन्सा शक्ति द्वारा सेवा को शक्तिशाली बनाने चाहते हैं।* वाणी द्वारा सेवा चलती रही है, चलती रहेगी, लेकिन इसमें समय लगता है। *समय कम है, सेवा अभी भी बहुत है।* रिजल्ट आप सबने सुनाई। अभी तक 108 की माला भी निकाल नहीं सकते। 16 हजार, 9 लाख - यह तो बहुत दूर हो गये। इसके लिए फास्ट विधि चाहिए। *पहले अपनी मन्सा को श्रेष्ठ, स्वच्छ बनाओ, एक सेकण्ड भी व्यर्थ नहीं जाये।* अभी तक मैजारिटी के वेस्ट संकल्प की परसेन्टेज रही हुई है। *अशुद्ध नहीं लेकिन वेस्ट हैं इसलिए मन्सा सेवा फास्ट गति से नहीं हो सकती।* अभी होली मनाना अर्थात् *मन्सा को व्यर्थ से भी होली बनाना।*

✺ *ड्रिल :- "मन्सा शक्ति द्वारा सेवा को शक्तिशाली बनाने का अनुभव"*

➳ _ ➳ मैं आत्मा खुले आसमान के नीचे बैठी... आत्मिक स्थिति का आनंद ले रही हूँ... यह शीतल हवा के साज़... पक्षियों के मधुर गीत... पेड़-पौधे व पत्तों के झूलने की आवाज़... सभी मुझे मेरे बाबा का संदेश सुना रहे हैं... *मेरे मन की लौ... महाज्योति... वरदाता... प्रभु पिता के साथ निरंतर लगी हुई है...* मेरे प्राणप्रिय मीठे बाबा मुझ आत्मा को... अपनी आंखों का नूर बनाते... दिलतख्तनशीन बनाते हैं... उनकी मीठी मीठी बातें सुनकर... उन्हें जीवन में धारण करती हुई... आनन्द से ड्रामा में पार्ट बजाती जा रही हूँ...

➳ _ ➳ एक सेकण्ड में ही मैं शक्तिशाली आत्मा... ज्योतिबिंदु स्वरूप में परमधाम... अपने प्यारे शिवबाबा के सम्मुख पहुंच जाता हूँ... सर्व शक्तियों के स्रोत... मेरे बाबा मुझ पर सर्व शक्तियों की किरणें बरसा रहे हैं... मुझे सर्वशक्ति संपन्न बना रहे हैं... अब मन्सा शक्ति द्वारा... फरिश्तों की दुनिया में फरिश्ता स्वरुप में... बाप दादा के सम्मुख पहुंच गया हूँ... बापदादा अपने वरदानी हस्तों से... मझ आत्मा को... *सर्व शक्तियों के सर्व खजाने सफल कर सफलतामर्त

भव... का वरदान दे रहे हैं...*

➳ _ ➳ बापदादा के साथ मैं फरिश्ता विश्व की सेवा कर रहा हूँ... डबल लाइट... शक्तिशाली स्थिति द्वारा... विश्व की आत्माओं को सकाश देता हुआ... उन्हें पीड़ाओ से मुक्त कर रहा हूँ... अब साकार वतन में उतर कर... भ्रकुटी अकाल तख्त पर विराजमान हो जाता हूँ... अब इस धरा पर मैं एक सामान्य व्यक्ति नहीं... विशेष आत्मा हूँ... *बेहद स्मृति द्वारा हद की बातों को समाप्त करने वाली... मास्टर सर्वशक्तिमान आत्मा हूँ...* चलते फिरते भी नेचुरल स्मृति है... आत्मिक स्थिति है... कहीं भी किसी में कोई आसक्ति नहीं है...

➳ _ ➳ मैं शक्ति स्वरुप... सदा सेवाओं में तत्पर हूँ... श्रेष्ठ संकल्पों का खज़ाना... संगमयुगी समय का खज़ाना... सर्व शक्तियों का खज़ाना... सर्व खजाने सफल कर रही हूँ... सेवाओं में सफलता मूर्त हूँ... मैं बाप समान सेवाधारी आत्मा... बुद्धि योग से... सदा एक बाप की प्यारी... सबसे न्यारी हूँ... *संकल्पों की वैल्यु... संगमयुगी समय की वैल्यु को समझकर... हर सेकंड को अमूल्य बना और बनाने की सेवा कर रही हूँ...* मन्सा शक्ति के द्वारा स्नेह और प्रेम से सेवा करते हुए... दुआओं का खज़ाना भी बढ़ाती जा रही हूँ...

➳ _ ➳ मुझ श्रेष्ठ आत्मा का... हर संकल्प... हर बोल... हर कर्म श्रेष्ठ है... अटैन्शन और चैकिंग की विधि द्वारा... व्यर्थ को पूर्ण रूप से समाप्त कर रही हूँ... सर्वशक्तियों की खान बन गई हूँ... देह की प्रवृति से पार हो कर... दिन रात सेवा में मग्न हूँ... कंपनी और कंपैनियन एक बाबा को ही बनाकर... समर्थ स्थिति में स्थित हूँ... मनसा... वाचा... चाल व चेहरा शक्तिशाली अनुभव कर रही हूँ... *मैं शक्तिस्वरूप आत्मा... सेवाएं करती हुई... सहज ही सफलता का सितारा बनते हुए अनुभव कर रही हूँ...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

ॐ शांति